



# Ancient Vedic Mantras and Rituals





## KANSA VADH | क्या है इसके पीछे की धार्मिक मान्यताएं? | PDF

**कंस वध उत्सव** मुख्यतः भगवान श्रीकृष्ण द्वारा मथुरा के अत्याचारी राजा कंस के वध के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। यह त्योहार विशेष रूप से उत्तर भारत, विशेषकर मथुरा और वृंदावन में भव्यता से मनाया जाता है। यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है, जिसमें भगवान कृष्ण ने अपने मामा कंस का वध करके मथुरा को आतंक और अन्याय से मुक्त किया था।

### कंस वध उत्सव का ऐतिहासिक महत्व

कंस वध का धार्मिक महत्व है, जो भगवान कृष्ण की लीला और उनके उद्देश्य को दर्शाता है। यह अधर्म पर धर्म की विजय और न्याय की स्थापना का प्रतीक है। यह मान्यता है कि कंस का वध केवल एक व्यक्तिगत विजय नहीं थी, बल्कि समाज में सत्य और न्याय की पुनः स्थापना का एक उदाहरण था।

### कंस वध की कथा

कंस, मथुरा का अत्याचारी राजा, अपनी बहन देवकी के आठवें पुत्र (श्रीकृष्ण) के हाथों अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी से भयभीत था। उसने देवकी और उनके पति वासुदेव को कारागार में डाल दिया और उनके सात पुत्रों की हत्या कर दी।



श्रीकृष्ण का जन्म देवकी के आठवें पुत्र के रूप में हुआ और गोकुल में नंद बाबा और यशोदा माता के यहां उनका पालन-पोषण हुआ। बड़े होने पर श्रीकृष्ण मथुरा आए और अपने भाई बलराम के साथ मिलकर कंस का वध किया।

## उत्सव का आयोजन

इस उत्सव में विभिन्न स्थानों पर नाट्य प्रस्तुतियों और झांकियों के माध्यम से कंस वध की पूरी कहानी को प्रस्तुत किया जाता है। मथुरा और वृंदावन में यह पर्व विशेष रूप से भव्यता से मनाया जाता है, जहां भगवान श्रीकृष्ण और बलराम की झांकियां सजाई जाती हैं, और अखाड़ों में मल्लयुद्ध का आयोजन किया जाता है।

## कंस वध उत्सव के प्रमुख कार्यक्रम

- 1. झांकियां:** कंस वध की कथा को दर्शाने के लिए झांकियां बनाई जाती हैं। भगवान श्रीकृष्ण के बाल्यकाल से लेकर कंस वध तक की घटनाओं को प्रदर्शित किया जाता है।
- 2. रामलीला और कृष्ण लीला:** स्थानीय कलाकार कंस वध का नाटकीय रूपांतर प्रस्तुत करते हैं। इसमें भगवान कृष्ण और बलराम की वीरता को दिखाया जाता है।
- 3. अखाड़ा प्रदर्शन:** उत्सव में मल्लयुद्ध और अन्य पारंपरिक खेलों का आयोजन होता है। इसमें पहलवानों के बीच मल्लयुद्ध होता है, जो श्रीकृष्ण और बलराम की वीरता की प्रतीक होता है।
- 4. रथयात्रा:** कुछ जगहों पर भगवान श्रीकृष्ण और बलराम की मूर्तियों को रथ पर सजाया जाता है और नगर में शोभायात्रा निकाली जाती है।



## व्रत और पूजा विधि

कंस वध उत्सव के दिन कुछ लोग व्रत रखते हैं और श्रीकृष्ण की विशेष पूजा करते हैं। यह व्रत अन्याय के अंत और धर्म की स्थापना के लिए भगवान श्रीकृष्ण के प्रति समर्पण का प्रतीक है।

- 1. मंदिर दर्शन:** भक्तगण मंदिरों में जाकर भगवान श्रीकृष्ण और बलराम के दर्शन करते हैं और विशेष आरती में भाग लेते हैं।
- 2. प्रसाद वितरण:** पूजा के उपरांत प्रसाद का वितरण होता है, जिसमें हलवा, पूरी और अन्य मिठाइयाँ होती हैं।
- 3. धार्मिक प्रवचन:** कई स्थानों पर इस अवसर पर धार्मिक प्रवचन और श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन किया जाता है।

## कंस वध उत्सव का महत्व

यह उत्सव हमें यह सिखाता है कि चाहे बुराई कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, सत्य और धर्म की सदा विजय होती है। यह बच्चों और युवाओं में नैतिक मूल्यों का संचार करने के साथ-साथ धर्म की राह पर चलने का प्रेरणा स्रोत भी है। कंस वध उत्सव भगवान श्रीकृष्ण की महानता, साहस और बुराई का नाश करने के संकल्प को प्रस्तुत करता है।

## कंस वध उत्सव और समाज पर प्रभाव

कंस वध उत्सव समाज में नैतिकता और सद्गुणों के प्रचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।



यह त्योहार हमें बुराई के अंत और सत्य की स्थापना की प्रेरणा देता है। कंस वध के प्रसंग से लोग यह सीखते हैं कि अधर्म और अन्याय का अंत सुनिश्चित होता है।

कंस वध उत्सव भारतीय संस्कृति और धार्मिक धरोहर का एक अभिन्न हिस्सा है, जो भगवान श्रीकृष्ण की अद्भुत लीलाओं और उनके प्रेरणादायक जीवन से हमें जोड़ता है। यह त्योहार भारतीय समाज में धर्म, सत्य, और न्याय के मूल्य स्थापित करता है और भगवान श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति की भावना को और अधिक प्रगाढ़ बनाता है।

## Related Articles



[Shri Krishna Chalisa](#)



[Shri Krishan Ji Aarti](#)



# THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS  
CONTENT ON



[vedicprayers.com](https://vedicprayers.com)



Follow us on:

